

रामकृष्णन कमीशन शिक्षक प्रशिक्षण धारणा में कहा है कि “ सच्ची शिक्षा केवल कुछ पाठों को पढ़ना और स्मरण करना ही नहीं है, वरन जीवनयापन एवं उद्देश्यपूर्ण कार्य में भाग लेना भी है “ शिक्षक – शिक्षा जीवन के सब क्षेत्रों को प्रभावित करने के कारण कला/ विज्ञान शिक्षण के साथ डिजिटल उपकरणों और आधुनिक पद्धतियों उपयोग करना चाहिए I शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 एक क्रान्तिकारी बदलाव हुआ है I 10+2 संरचना के बदले नई शैक्षणिक संरचना 5+3+3+4 लाया गया I ये 4 अवस्था है - फाउंडेशनल स्टेज, प्रिपेरेटरी स्टेज, मिडिल स्टेज एवं सेकेंडरी स्टेज I फाउंडेशनल स्टेज में ग्री - स्कूल/ अंगनवाड़ी/ बालवाटिका के साथ कक्षा 1,2 को मिलाया गया I इस अवस्था 3 से लेकर 8 आयु तक बच्चों के लिए है I प्रिपेरेटरी स्टेज में 3 से लेकर 5 कक्षा तक रखा गया I इस अवस्था में 8 से लेकर 11 आयु तक बच्चों के लिए है I मिडिल स्टेज 6 से लेकर 8 कक्षा तक रखा गया I इस अवस्था में 11 से लेकर 14 आयु तक बच्चों के लिए है I सेकेंडरी स्टेज 9 से लेकर 12 तक रखा गया I इस अवस्था में 14 से लेकर 18 आयु तक बच्चों के लिए है I प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानिय भाषा उपयोग किया गया I व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया गया I परीक्षा के बजाय समझ और व्यवहारिक ज्ञान को बताया गया I आब स्कूल स्तर पर कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच कड़ी विभाजन रेखा नहीं होगी I छात्रों बहु विषयों से अपना चयनित विषय को प्राप्त करने में सक्षम होंगे I मल्टीपल एंटी/ एग्जिट होने का विकल्प दिया गया I क्रेडिटस को स्टोर करने और डिग्री के लिए उपयोग करने की सुविधा दिया गया I आवश्यक विषयों, कौशलों और क्षमताओं का पाठ्यक्रम में समावेशन के पर ध्यान दिया गया I इस शिक्षा नीति समग्र विकास (मानसिक, भावात्मक और क्रियात्मक) की बात करती है I पर्यावरण के साथ अवधारणाओं का जुड़ाव स्थापित करने के लिए भी कहता है I छात्रों का मूल्यांकन के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग (रोल प्ले, पोर्टफोलियो आदि) करके गतिविधियों द्वारा करने पर बल दिया गया I शिक्षार्थियों के अद्वितीय क्षमताओं को प्रतिबिंबित करने में शिक्षक का हाथ रहता है I सुगठित व्यक्तित्व, पूर्ण चरित्र निर्माण के लिए अपना प्रयास के साथ शिक्षक और शिक्षा आवश्यक है I अतः कहा जा सकता है चरित्र निर्माण में शिक्षक – शिक्षा परिपूरक है I

\*\*\*\*\*

### संदर्भ सूची :-

1. स्वामी हर्षानन्द ,विद्यार्थी- शक्ति कितनी उपयोगी , पृ.-८
2. स्वामी हर्षानन्द ,विद्यार्थी- शक्ति कितनी उपयोगी , पृ.-८
3. पी.डी. पाठक , भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ , पृ.-३३४
4. पी.डी. पाठक , भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ , पृ.-३३५

## अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र: समकालीन हिंदी कविता में आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया

डॉ.सलीजा ए पी

असिस्टेंट प्रोफेसर

PG & Research department of Hindi  
Govt.arts &science College, Kozhikode, keralam

**प्रस्तावना:** मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य की संवेदनाएँ और उसके अनुभव भी निरंतर बदलते रहे हैं। आधुनिक समय में विज्ञान, तकनीक, शहरीकरण और वैश्वीकरण ने मनुष्य के जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ तो दी हैं, किंतु इसके साथ ही एक गहरा मानसिक और भावनात्मक संकट भी उत्पन्न किया है। इस संकट का एक प्रमुख रूप है—अकेलापन। आज का मनुष्य भीड़ में रहते हुए भी भीतर से अकेला होता जा रहा है। परिवारों का विघटन, संबंधों का औपचारिक होना, सामाजिक प्रतिस्पर्धा और डिजिटल जीवन शैली ने मनुष्य के भीतर एक ऐसी रिक्तता पैदा की है जो उसकी आत्मा को निरंतर कचोटती रहती है।

साहित्य, विशेष रूप से कविता, हमेशा से मनुष्य की अंतरतम अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। समकालीन हिंदी कविता में आधुनिक मनुष्य के इसी अकेलेपन, उसकी आंतरिक बेचैनी और उसके आत्मिक संघर्ष का गहन चित्रण मिलता है। यह अकेलापन केवल दुख या पीड़ा का अनुभव नहीं है, बल्कि कई बार यह एक रचनात्मक और चिंतनशील स्थिति भी बन जाता है। इसी कारण समकालीन कवियों ने अकेलेपन को केवल एक नकारात्मक अनुभव के रूप में नहीं, बल्कि एक सौंदर्यात्मक और दार्शनिक अनुभव के रूप में भी प्रस्तुत किया है।

इस लेख का उद्देश्य यह समझना है कि समकालीन हिंदी कविता में अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र किस प्रकार निर्मित होता है और आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया को किस प्रकार व्यक्त करता है।

### आधुनिक जीवन और अकेलेपन की अनुभूति

आधुनिक जीवन की गति अत्यंत तीव्र हो चुकी है। महानगरों की चकाचौंध, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को निरंतर व्यस्त और चिंतित बना दिया है। आज व्यक्ति के पास भौतिक संसाधनों की कमी नहीं है, परंतु भावनात्मक संबंधों की गर्माहट धीरे-धीरे कम होती जा रही है। पहले संयुक्त परिवारों और सामुदायिक जीवन के कारण मनुष्य अकेलेपन से अपेक्षाकृत दूर था। परिवार, पड़ोस और सामाजिक संबंध उसके जीवन को एक प्रकार की स्थिरता और आत्मीयता प्रदान करते थे। किंतु आधुनिक शहरी जीवन में यह सामूहिकता टूटने लगी है। व्यक्ति अब एक छोटे से फ्लैट में सीमित जीवन जीता है, जहाँ उसके पास समय भी कम है और संवाद के अवसर भी सीमित हैं।

डिजिटल युग ने इस स्थिति को और जटिल बना दिया है। सोशल मीडिया और आभासी संवाद ने लोगों को बाहरी रूप से जोड़ तो दिया है, परंतु वास्तविक मानवीय संबंधों की गहराई कहीं-न-कहीं कम होती जा रही है। परिणामस्वरूप आधुनिक मनुष्य के भीतर एक गहरी आंतरिक रिक्तता पैदा हो रही है। समकालीन हिंदी कवियों ने इस बदलती सामाजिक संरचना और मानसिक स्थिति को बड़ी सूक्ष्मता से पहचाना है। उनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की भांगदौड़, मनुष्य की थकान, संबंधों की दूरी और अकेलेपन की पीड़ा बार-बार सामने आती है।

### अकेलेपन का सौंदर्यशास्त्र : एक अवधारणा

सामान्यतः अकेलापन एक नकारात्मक अनुभव माना जाता है, क्योंकि

- मानसिक अकेलापन
- सामाजिक अकेलापन
- अस्तित्वगत अकेलापन

इन तीनों स्तरों के माध्यम से कवि आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया को व्यक्त करता है। इस प्रक्रिया में अकेलापन केवल एक भावनात्मक स्थिति नहीं रह जाता, बल्कि वह एक कलात्मक अनुभव बन जाता है।

### समकालीन हिंदी कविता में अकेलेपन की अभिव्यक्ति

समकालीन हिंदी कविता में अनेक कवियों ने आधुनिक जीवन की इस अकेलेपन भरी स्थिति को अपने काव्य का विषय बनाया है। उनकी कविताओं में शहर की भीड़, खाली कमरों की खामोशी, टूटते संबंध और मनुष्य की आंतरिक बेचैनी के अनेक चित्र दिखाई देते हैं।

पहले ज़माने की कविताओं में कई कवियों ने अकेलेपन की खूबसूरती पर या तनाव पर कविता लिखी है। **रघुवीर सहाय** की कविता "लोग भूल गए हैं" में आधुनिक मनुष्य के भीतर बढ़ती दूरी और अकेलेपन की स्थिति दिखाई देती है। इसी प्रकार **केदारनाथ सिंह** की प्रसिद्ध कविता "अकेला आदमी" में व्यक्ति के भीतर के एकांत और समाज से कटाव की अनुभूति को गहराई से व्यक्त किया गया है। **कुंवर नारायण** की कविताओं में भी आधुनिक जीवन की भीड़ के बीच मनुष्य के भीतर के एकांत का मार्मिक चित्रण मिलता है। वहीं **धूमिल** की कविताओं में व्यवस्था और समाज के प्रति असंतोष के कारण उत्पन्न मानसिक अकेलेपन की झलक मिलती है।

महादेवी वर्मा ने जो अकेलापन दर्ज की है, वह बेहद अलग था, उनकी कविताओं में नारी के अंतर्मन की गहरी भावनाएँ, पीड़ा और अकेलापन दिखाई देता है। उनकी कविता केवल प्रेम या व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें नारी की स्वतंत्र चेतना, आत्मसम्मान और सामाजिक बंधनों से संघर्ष भी व्यक्त होता है। उनकी रचनाओं में नारी को केवल प्रेमिका या सहायक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविताओं में अकेलापन, आत्मसंवाद, संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता के भाव प्रमुख हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी कविताओं में \*दीप, तारा, पथिक, अधिकार, कमल, नयन\* जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया है, जो नारी के दर्द, आशा, संघर्ष और आत्मिक खोज को दर्शाते हैं। उनके काव्य में नारी के भीतर छिपी हुई शक्ति और उसकी पहचान की खोज भी दिखाई देती है।

महादेवी वर्मा का काव्य नारी की भावनात्मक दुनिया, उसकी स्वतंत्र पहचान और समाज में उसके स्थान को गहराई से प्रस्तुत करता है। उनकी कविताएँ केवल साहित्यिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि नारी चेतना और मानवीय संवेदनाओं का भी सशक्त चित्रण करती हैं। इस से अलग समकालीन कविताओं से अकेलेपन दर्ज करने वाली कई उदहारण लेने पर हम देख सकते हैं। **अंजुम शर्मा** की कविता - जिस रोज अकेला होता है आदमी; की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं जिस रोज अकेला होता है आदमी

तो वह अकेला नहीं नितांत अकेला होता है

अकेले में अकेला

भीड़ में और अधिक अकेला

जिस रोज होता है आदमी सबसे ज्यादा अकेला

उस रोज कोई दरवाजे के कान नहीं उमेठता

न ही फोन घनघनाता है पल भर

उस रोज संदेशों की आँख लग जाती है

मौन का गला नहीं खुलता

इस के ज़रिये अंजुम शर्मा जी अकेलेपन की तनाव को उसकी कठोर अवस्था को व्यक्त किया है। कैलाश वाजपेयी जी ने अपनी कविता "भटका हुआ अकेलेपन" में अपनी अकेलेपन की घबराहट को उसी घबराहट के साथ व्यक्त किया है -

यह अधनंगी शाम और  
यह भटका हुआ/अकेलापन  
मैंने फिर घबराकर अपना शीशा तोड़ दिया।  
राजमार्ग—कोलाहल—पहिए  
काँटदार रंग गहरे/यंत्र-सभ्यता चूस-चूसकर  
फेंके गए अस्त चेहरे  
झाग उगलती खुली खिड़कियाँ/सड़े गीत सँकरे ज़ीने  
किसी एक कमरे में मुझको  
बंद कर लिया फिर मैंने

सुधा अरोड़ा बताती है कि अकेली औरत का हँसना किसी को सुहाता नहीं है, किसी को अच्छा नहीं लगेगा कि एक अकेली औरत बिना किसी के सहारे हँसी खुशी के साथ जी सकती है, वे कहती है -

“अकेली औरत/खुद से खुद को छिपाती है।  
होंठों के बीच क्रैद पड़ी हँसी को खींचकर  
जबरन हँसती है

और हँसी बीच रास्ते ही टूट जाती है...

अकेली औरत का हँसना,  
नहीं सुहाता लोगों को।”

रवीन्द्र स्वप्निल त्रिपाठी ने अकेलेपन को रुमाल बताया है और कहते हैं कि-

“अकेलापन एक रुमाल है

जो मेरे हाथों से गिरकर अधखुले दरवाजे पर पड़ा है  
यादों के फ़र्श पर उसकी सलवटे धूल जैसी बन गईं  
अकेलापन कमरे में भरी हवा में धुला है  
मैं आकर अपने पलैट पर साँस लेता हूँ”

निधीश त्यागी ने अपने अँधेरे अकेले में नमक कविता में बताते हैं -

“जैसे मौसम पहनता है पृथ्वी  
उसकी प्रकृति को पहनना था उसे  
देर रात वह अपनी साड़ी  
उतार तह बनाती है  
उसे छूती है सहलाती है  
देर रात वह अपना शूंगार  
उतारती है जो किया गया था  
जा चुके पल और प्यार के लिए”

सोम प्रभ की कविता 'मैं अकेला नहीं था' में कवि अपने आप को अकेला मानने के लिए तैयार नहीं है, वे कहते हैं पर मैं उसमें मलहम नहीं भर सकता हूँ

मैं अकेला नहीं हूँ/बहुत-से हैं मेरी तरह  
जिनके पास एक ही विकल्प है  
कि हम अपनी देह के भीतर चले जाएँ  
और नींद में जागते रहें

सोम प्रभ जी अपने आप को अकेला मानने के लिए तैयार नहीं है तो त्रिलोचन जी अपने आप को अकेला ही मानकर कहते हैं कि मुझसे अकेला नहीं रहा जाता -

“आज मैं अकेला हूँ/अकेले रहा नहीं जाता  
जी व न मि ला है य ह/र त न मि ला है य ह  
धूल में/कि/फल में/मिला है  
तो/मिला है यह/मौ ल-तो ल इ स का  
अ के ले क हा न हीं जा ता”

इन कविताओं में अक्सर ऐसे बिंब मिलते हैं जो आधुनिक जीवन की विडंबना को उजागर करते हैं—जैसे खाली सड़के, बंद दरवाजे, मोबाइल स्क्रीन की रोशनी में डूबा हुआ चेहरा, या देर रात तक जागता हुआ शहर।

ये सभी बिंब आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन की ओर संकेत करते हैं। कई कवियों ने यह भी दिखाया है कि आधुनिक जीवन में मनुष्य का संवाद धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। लोग एक-दूसरे के साथ रहते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर होते जा रहे हैं। इस स्थिति को कविता में अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है।

समकालीन कवियों की दृष्टि में अकेलापन केवल सामाजिक परिस्थिति का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आधुनिक मनुष्य की आंतरिक स्थिति भी है। मनुष्य अपने ही विचारों, स्मृतियों और इच्छाओं के बीच एक ऐसे संसार में रहता है जहाँ उसे स्वयं को समझने का अवसर मिलता है।

**अकेलापन और आत्मचिंतन** :-समकालीन हिंदी कविता में अकेलापन कई बार आत्मचिंतन की स्थिति बन जाता है। जब मनुष्य भीड़ से दूर होकर स्वयं के साथ होता है, तब उसे अपने भीतर झाँकने का अवसर मिलता है। इस दृष्टि से अकेलापन केवल दुखद अनुभव नहीं है, बल्कि यह आत्मबोध की प्रक्रिया भी बन सकता है। कई कवियों ने अपनी कविताओं में यह दिखाया है कि अकेलेपन के क्षणों में मनुष्य अपने जीवन, अपने संबंधों और अपने अस्तित्व के बारे में गंभीरता से सोचता है।

यह आत्मचिंतन कभी-कभी जीवन के नए अर्थों को भी उद्घाटित करता है। मनुष्य अपने भीतर छिपी संवेदनाओं और संभावनाओं को पहचानने लगता है। इस प्रकार अकेलापन एक प्रकार की रचनात्मक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाता है।

**शहर और अकेलेपन का संबंध**-समकालीन हिंदी कविता में शहर का चित्रण अक्सर अकेलेपन से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। महानगरों की भीड़, ऊँची इमारतें, व्यस्त सड़कें और तेज रफ्तार जीवन—ये सभी आधुनिकता के प्रतीक हैं, किंतु इनके बीच मनुष्य की भावनात्मक स्थिति कई बार अत्यंत एकाकी हो जाती है।

कई कविताओं में शहर को एक ऐसे स्थान के रूप में चित्रित किया गया है जहाँ हजारों लोग रहते हैं, परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने संसार में बंद है। पड़ोसी एक-दूसरे को पहचानते तक नहीं, और संबंध धीरे-धीरे औपचारिक होते जाते हैं। इस प्रकार शहर आधुनिक जीवन की उस विडंबना का प्रतीक बन जाता है जिसमें भीड़ के बीच अकेलापन जन्म लेता है।

**भाषा, बिंब और प्रतीक**-समकालीन हिंदी कविता में अकेलेपन की अभिव्यक्ति के लिए कवि विशेष प्रकार की भाषा और बिंबों का प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा अक्सर सरल, संवेदनशील और आत्मीय होती है, जिससे पाठक सीधे उस अनुभव से जुड़ जाता है। कई कविताओं में प्रकृति के बिंबों का भी प्रयोग किया गया है—जैसे खाली आकाश, सूनी शाम, या ठंडी हवा। ये बिंब मनुष्य की आंतरिक स्थिति को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करते हैं।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक जीवन से जुड़े बिंब—जैसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर स्क्रीन, मेट्रो स्टेशन, या बंद कमरा—भी कविता में दिखाई देते हैं। ये बिंब आधुनिक जीवन की वास्तविकता को सामने लाते हैं और अकेलेपन की अनुभूति को और अधिक गहरा बनाते हैं।

**अकेलेपन का सकारात्मक पक्ष**-हालाँकि अकेलापन अक्सर दुख और पीड़ा से जुड़ा होता है, परंतु समकालीन हिंदी कविता में इसका एक सकारात्मक पक्ष भी दिखाई देता है। कई कवियों ने अकेलेपन को रचनात्मकता, स्वतंत्रता और आत्मबोध के रूप में देखा है। अकेलेपन के क्षणों में मनुष्य अपने भीतर की आवाज़ को सुन सकता है। वह अपने विचारों और भावनाओं के साथ ईमानदारी से संवाद कर सकता है। यही कारण है कि कई कवियों के लिए अकेलापन एक प्रकार की आत्मिक मुक्ति का अनुभव बन जाता है। इस दृष्टि से अकेलापन केवल आधुनिक जीवन की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की रचनात्मक और आध्यात्मिक संभावनाओं का भी संकेत देता है।

**निष्कर्ष**-समकालीन हिंदी कविता में आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन की अनुभूति अत्यंत महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर सामने आती है। यह अकेलापन केवल सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मनुष्य की आंतरिक संवेदनाओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

कवियों ने इस अनुभव को अत्यंत संवेदनशील और कलात्मक ढंग से व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में अकेलापन केवल दुख या निराशा का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आत्मचिंतन, रचनात्मकता और आत्मबोध की प्रक्रिया भी बन जाता है।

इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता आधुनिक मनुष्य की आंतरिक दुनिया को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती है। अकेलेपन का यह सौंदर्यशास्त्र हमें यह सिखाता है कि जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों के बीच भी मनुष्य अपनी संवेदनशीलता और रचनात्मकता को बनाए रख सकता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी कविता में अकेलेपन की अभिव्यक्ति आधुनिक समय की एक गहरी सांस्कृतिक और मानवीय सच्चाई को सामने लाती है। यह कविता हमें अपने भीतर झाँकने और अपने अस्तित्व के अर्थ को समझने के लिए प्रेरित करती है।

\*\*\*\*\*

#### संदर्भ

1. आधुनिकता और हिंदी साहित्य — नामवर सिंह
2. हिंदी कविता का विकास — रामविलास शर्मा
3. आधुनिक हिंदी कविता: एक परिप्रेक्ष्य — विश्वनाथ त्रिपाठी